| Publication : Hukmnama Samachar | Subject : Rajasthan Court’s Verdict Welocmed by Consumer Body |
|---|---|
| Date of Publish : 12th April 2018 | Edition : Rajasthan |

हुक्मनामा समाचार

# राजस्थान सरकार के ई-सिगरेट के स्वास्थ्य पर प्रभाव के अध्ययन के फैसले का उपभोक्ताओं ने किया स्वागत

**जयपुर।** राजस्थान सरकार ने वैपिंग (ई-सिगरेट) के स्वास्थ्य पर असर के आकलन के लिए एक अध्ययन कराने का ऐलान किया है। ई-सिगरेट यूजर्स का प्रतिनिधित्व करने वाले एक राष्ट्रीय संगठन एसोसिएशन ऑफ वैपर्स इंडिया (एवीआई) ने रा%य सरकार के इस फैसले का स्वागत किया है। रा%य सरकार ने गैर तम्बाकू उत्पादों के भविष्य पर कोई फैसला लेने से पहले यह कदम उठाया है। राजस्थान के स्वास्थ्य मंत्री कालीचरण सराफने गुरुवार को रा%य सरकार के इस फैसले की घोषणा की थी। सराफने कहा कि यदि अध्ययन में इसे (ई-सिगरेट) नुकसानदेह पाया जाता है तो रा%य में इस पर प्रतिबंध लगाने से संबंधित दिशानिर्देश जारी किए जाएंगे। एवीआई ने मीडिया को उन लोगों के बारे जानकारियां मुहैया कराने की पेशकश की है, जिन्होंने तम्बाकू की सिगरेट छोड़कर ई-सिगरेट अपनाकर फायदा उठाया है। एसोसिएशन ने मंत्री से मिलकर वैश्विक स्तर पर हुए प्रतिष्ठित संगठनों द्वारा ई-सिगरेट के स्वास्थ्य पर प्रभाव से संबंधित 100 से %यादा अध्ययन को उनके साथ साझा करने की पेशकश की है। एवीआई के निदेशक सम्राट चौधरी ने कहा, 'हमारा मानना है कि तम्बाकू से होने वाले नुकसान में कमी के वास्ते विज्ञान आधारित सोच से भारत और रा%य में धूम्रपान करने वालों के जीवन में सकारात्मक बदलाव देखने को मिलेगा। हमारा रा%य सरकार से इलेक्ट्रॉनिक निकोटिन डिलिवरी सिस्टम (ईएनडीएस), जिसे इलेक्ट्रॉनिक सिगरेट के तौर पर भी जाना जाता है, पर नीति तैयार करते समय विज्ञान आधारित तथ्यों को संज्ञान में लेने का अनुरोध है। चौधरी ने कहा कि ई-सिगरेट एक तकनीक विकास है, जिससे तम्बाकू उत्पादों के सेवन से होने वाले नुकसान में 95 प्रतिशत तक कमी आती है। उन्होंने कहा कि वैपिंग के विकल्प को अनुमति देना भारत में 12 करोड़ स्मोकर्स के जीवन की रक्षा के लिहाज से अहम होगा। उन्होंने कहा कि अगर ई-सिगरेट जैसे कम जोखिम वाले विकल्पों तक पहुंच से इनकार कर दिया जाता है तो इनमें से आधे स्मोकर्स की जान जाने की संभावनाएं पैदा हो सकती हैं। चौधरी ने कहा कि वैज्ञानिक समुदाय में तुलनात्मक रूप से ईएनडीएस के %यादा सुरक्षित होने पर सहमति है। इस तथ्य को रॉयल चौलेंज फिजीशिएंस, यूकेय पब्लिक हेल्थ इंग्लैंडय नेशनल एकेडमिक्स ऑफ साइंसेज, इंजीनियरिंग मेडिसिन, यूएसएय कैंसर रिसर्च यूके और अमेरिकन कैंसर सोसायटी सहित कई ने स्वीकार किया है।

निकोटिन के लोग आदी हो जाते हैं, जो तम्बाकू के जलने से पैदा होने वाला टार होता है। यह स्मोकर्स के लिए नुकसानदेह होता है। ई-सिगरेट से टार पैदा नहीं होता है। इलेक्ट्रॉनिक सिगरेट में इस्तेमाल होने वाला निकोटिन हर उम्र के लोगों के लिए काउंटर पर बिकने वाले निकोटिन गम और पैचेस में इस्तेमाल होने वाली निकोटिन रिप्लेसमेंट थेरेपीज (एनआरटी) की तरह होता है। चौधरी ने कहा कि एनआरटी की सफलता की दर कम होती है, समाप्ति दर महज 7 प्रतिशत होती है, वहीं वैपिंग 60 प्रतिशत से ज्यादा मामलों में प्रभावी होती है।